

मान लो कि देश को तुम्हारी आवश्यकता है। सरकार चाहती है कि तुम सैनिक बनकर मोर्चे पर शत्रु से लड़ो। पर लड़ाई की बात तो तुम जानते ही हो, लड़ाई में प्रति क्षण जान का डर होता है। क्या पता कब शत्रु की गोली से घायल हो जाओ ? कब बम फट जाये और तुम वहीं ढेर हो जाओ। तरह-तरह की मुसीबतें भी झेलनी पड़ती हैं। कई बार रात-रात भर जागना पड़ता है। भूख और प्यास को सहन करना पड़ता है। सर्दी और गर्मी झेलनी पड़ती है। पर देश की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है।

दूसरी ओर, घर में बूढ़े माता-पिता हैं। उनका क्या होगा ? कौन उनकी देख-रेख करेगा ? माता-पिता का प्यार कहता है कि घर छोड़कर मत जाओ। यह भावना है।

यह कर्तव्य और भावना की लड़ाई है। अगर तुम घर बैठे रहते हो, तो मैं कहूँगा कि तुमने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया और भावना के वशीभूत होकर घट बैठे रहे। देश को तुम्हारी ज़रूरत थी और तुम ऐसे मौके पर अपने कर्तव्य से गिर गये।

अगर तुम देश की रक्षा के लिए मोर्चे पर चले जाते हो, तो मैं कहूँगा कि तुमने अपने कर्तव्य का पालन किया। कर्तव्य की जोत हुई और भावना की हार।

विद्वानों का कहना है कि भावना से कर्तव्य ऊँचा है। जो व्यक्ति भावना के वश में न होकर अपने कर्तव्य का पालन करना है, वह आदर और सम्मान का अधिकारी है।

रामायण की कथा तो तुमने सुनी होगी। भगवान् राम अपना कर्तव्य निभाने के लिए चौदह वर्ष तक वनवास में रहे। भरत, मन्त्री और गुरु वशिष्ठ सबने उन्हें जंगल से वापिस अयोध्या लौट चलने के लिए कहा पर वे अपने कर्तव्य को पहचानते थे।

इसी प्रकार धोबी के यह कहने पर कि “मैं रामचन्द्र नहीं” उन्होंने भगवती सीता को त्याग दिया। वहाँ भी भावना को महत्त्व न देकर उन्होंने कर्तव्य का ही पालन किया था।

इसी प्रकार एक उदाहरण हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का भी है। 1960 के गणतन्त्र दिवस के पुण्य पर्व पर एक ऐसा ही अवसर हमारे महामहिम राष्ट्रपति के सामने उपस्थित हुआ था।

उनके बड़ी बहन श्रीमती भगवती देवी का 90 वर्ष की अवस्था में 25 जनवरी को रात को साढ़े ग्यारह बजे राष्ट्रपति भवन में स्वर्गवास हो गया। 26 जनवरी की प्रातः ही गणराज्य की सैनिक परेड निकलने वाली थी और राष्ट्रपति को उसकी सलामी लेनी थी। अगर राष्ट्रपति की बहन की मृत्यु का समाचार जरा भी लोगों को मालूम हुआ तो जो भी सुनेगा वह शोक प्रकट करने के लिए राष्ट्रपति भवन आयेगा। मन्त्रीगण, संसद सदस्य, बड़े-बड़े अधिकारी, विदेशों के राजदूत, सभी शोक प्रकट करने आयेंगे। उनके आने से राष्ट्र के इस पुण्य-पर्व मनाने का उत्साह

ढीला पड़ जाएगा। इसलिए राष्ट्रपति ने यह हिदायत कर दी कि यह समाचार राष्ट्रपति भवन से बाहर न जाने पाये। केवल प्रधानमन्त्री जी को इसकी सूचना दी गयी, वह भी 26 जनवरी को प्रातः 7 बजे। साथ ही, उन्हें यह भी बता दिया गया कि आप चिन्ता न करें, राष्ट्रपति जी सैनिक परेड की सलामी लेने के लिए तैयार हैं।

उसी रात राष्ट्रपति जी सो नहीं सके। परेड के समय लोगों ने देखा कि वे सलामी लेते-लेते, बीच-बीच में कुर्सी पर विश्राम करने बैठ जाते हैं। सोचा कि संभवतः बुढ़ापे के कारण अधिक समय तक खड़े रहना उनके लिए कठिन है। किसी को क्या पता था कि उनके दिल पर इस समय क्या बीत रही है।

घर में बड़ी बहन की लाश थी। सामने से बाजे बजते गुज़र रहे थे। लोग नर्तक नाचते-गाते सामने से जा रहे थे। पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के चेहरे पर शोक की रेखा तक नहीं थी। महर्षि वाल्मीकि ने लिखा है कि रामचन्द्र जी को जब यह बताया गया कि आपका राज्यभिषेक होने वाला है उनका चेहरा प्रसन्नता से खिला नहीं और जब यह बताया गया कि आपको चौदह वर्ष वनवास में रहना पड़ेगा, तो उनका चेहरा उदास नहीं हुआ। महापुरुषों की महानता ऐसे ही अवसरों पर देखी जाती है।

हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सामने भी भावना और कर्तव्य का द्वंद्व उपस्थित हुआ था। उन्होंने भावना के वशीभूत न होकर कर्तव्य को चुना और विजयी हुए।

* अभ्यास *

1. तुम्हारा क्या कर्तव्य है ?
2. भगवान् राम ने अपना कर्तव्य किस प्रकार निभाया ?
3. राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के कर्तव्य पालन की घटना का वर्णन करो।
4. महापुरुषों की महानता कैसे पहचानी जाती है ?

